किशोरियों के बढ़ते कदम

- जागोरी टीम, नई दिल्ली

जागोरी औरतों का प्रशिक्षण संदर्भ व सम्प्रेषण केन्द्र है जिसकी शुरुआत 1984 में हुई थी। पिछले दो दशकों से जागोरी ने विविध क्षेत्रों में औरतों के प्रति हिंसा के खिलाफ संघर्षों में भागीदारी निभाई है। इसके साथ-साथ जन शिक्षण नीति निर्धारण, प्रचार व हिंसा के खिलाफ सामुदायिक पहल में भी जागोरी अगुआई करती है। औरतों व उनके हकों से जुड़े मुख्य राष्ट्रीय अभियानों जैसे खतरनाक गर्भनिरोधक का विरोध, बलात्कार व दहेज विरोधी आंदोलनों से जागोरी संस्था जुड़ी हुई है। महिला मुद्दों से संबंधित गीत, पोस्टर, प्रदर्शनी व किताबों का प्रकाशन भी जागोरी की मुख्य गतिविधियों में शामिल रहा है।

जागोरी महिला आंदोलन का एक हिस्सा होने के नाते जहाँ एक ओर महिलाओं की स्थिति एवं दर्जे का आकलन करते हुए आगे बढ़ी, उसी तरह किशोरियों की जिंदगी को भी करीब से समझा और कुछ खास बिंदुओं पर किशोरियों के साथ अपने काम को केन्द्रित किया। 2003-2004 में जागोरी ने दिल्ली की दो बस्तियों में काम करना शुरू किया।

समाज की रूढ़िवादी मानसिकता के कारण वे अपने विकास से वंचित हैं। किशोरियों के लिए न तो शिक्षा है और न ही खेल के साधन हैं । इसके साथ-साथ किशोरियां घरेलू हिंसा की भी शिकार होती हैं। परिवार में आर्थिक तंगी होने के कारण, बचपन में ही रोजगार की तलाश में ये किशोरियां घरों में घरेलू कामगार के रूप में काम शुरू कर देती हैं।

इस आकलन के आधार पर हमने पाया किशोरियां कुछ खास समस्याओं से ग्रसित हैं, जैसे घर के अंदर व बाहर लिंग आधारित भेदभाव, शिक्षा के अवसरों की कमी, सुरक्षा व हिफाजत के मुद्दे एवं घर और बाहर के कामों की दोहरी जिम्मेदारी का बोझ।

किशोरियों के लिए चुनौतियां -

* एक खास उम्र में शिक्षा से वंचित रहना।
* घर की आर्थिक तंगी की कीमत किशोरियों को चुकाना ।
* परिवार के किसी और सदस्य द्वारा उनकी जिंदगी का हर फैसला लिया जाना।
* हमारी व्यवस्थाओं जैसे धर्म, समाज एवं समुदाय द्वारा उनके हर कदम पर, घर की इज्जत के नाम पर पाबंदिया लगाया जाना।

जागोरी की पहल

* समूह निर्माण द्वारा किशोरियों को संगठित किया।
* जेंडर व हिंसा पर प्रशिक्षण द्वारा समझ विकसित करना। जैसे जेंडर, हिंसा, यौनभाव, संगठन निर्माण आदि।
* बुनियादी शिक्षा के अवसरों तक पहुंच बनाना।

* लाईब्रेरी के माध्यम से बाहरी दुनिया से जुड़ाव व प्रेरणा।
* अभियान व अन्य कार्यक्रमों द्वारा नागरिक अधिकारों के तहत सरकार के साथ विचार-विमर्श में भागीदारी।
* हर तीन माह में दीवार पत्रिका के माध्यम से समुदाय तक अपने मुद्दे पहुंचाना।

किशोरियों की क्षमताएं बढ़ाना

* गैर परम्परागत हुनर विकास के कार्यक्रम चलाना जैसे कंप्यूटर शिक्षा आदि।
* साइकिल चलाने के माध्यम से आने जाने की आजादी व आत्म निर्भरता को बढ़ावा देना।
* कम्यूनिटी रेडियो कार्यक्रम में किशोरियों का सक्रिय योगदान।

अतः यह कहना सही होगा कि किशोरियों के लिए वह हर मंच हो जहां पर वे अपनी बात खुलकर रख पाएं, फिर वह घर के अंदर हों या बाहर। हमारी किशोरियां व हम सब एक-दूसरे से प्रेरित हों व आगे कदम बढ़ाएं, इस सोच के साथ कि हम एक ऐसे समाज का निर्माण करें जिसमें किशोरियों व हम सब के लिए बराबरी के अधिकार व कर्तव्य हों।

***

कविता

बाल विवाह

- कोमल, अक्षता, मनाली, कंचन

देखती हूँ मैं अपनी सहेलियों को पढ़ते हुए
तो मुझे लगता है आगे बढ़ने के लिए
पर मुझ पर है ये पाबंदी कि मेरी हो गई है शादी
मेरे माता-पिता ने कर दी है मेरी जिंदगी की बरबादी
जब बच्चों को देखती हूँ तो मेरा मन होता है उदास बड़ा
पर मेरे घर में काम बहुत है पड़ा,
सब बच्चों की सहायता के लिए उनके
माता-पिता हैं पास,
पर मेरी सहायता के लिए कौन है मेरे पास ?
मेरा भी है एक सवाल,
क्यों कर दिया मेरा बाल बिवाह ?
क्यों मेरी जिंदगी कर दी बेहाल ?

***

वाचा महिला तथा किशोरी संसाधन केन्द्र के प्रकाशन 'बोले किशोरी' मुंबई की झुग्गी बस्तियों में रहती लड़कियों की अभिव्यक्ति के सौजन्य से।